छत्तीसगढ़ विधान सभा
की
अशोधित कार्यवाही

चतुर्थ विधान सभा **सप्तदश सत्र**

मंगलवार, दिनांक 11 सितम्बर, 2018

(भाद्रपद 20, शक सम्वत् 1940)

[अंक 01]

विधान सभा के पदाधिकारी

अध्यक्ष	श्री गौरी शंकर अग्रवाल
उपाध्यक्ष	श्री बद्रीधर दीवान
सचिव	श्री चन्द्रशेखर गंगराड़े

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

माननीय राज्यपाल

श्रीमती आनंदीबेन मफतभाई पटेल

मंत्रिमंडल के सदस्यों की सूची

1.	डॉ0रमन सिंह, मुख्यमंत्री	सामान्य प्रशासन, वित्त, इलेक्ट्रानिक्स एवं प्रौद्योगिकी, जन सम्पर्क, खनिज साधन,ऊर्जा,विमानन एवं अन्य विभाग जो किसी मंत्री को आवंटित ना हो.
2.	श्री अजय चंद्राकर, मंत्री	पंचायत एवं ग्रामीण विकास, संसदीय कार्य, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा
3.	श्री अमर अग्रवाल, मंत्री	वाणिज्यिक कर,नगरीय प्रशासन,वाणिज्य एवं उद्योग तथा सार्वजनिक उपक्रम विभाग
4.	श्री बृजमोहन अग्रवाल, मंत्री	कृषि एवं जैव विविधता, पशुपालन, मछली पालन जल संसाधन, आयाकट, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व
5.	श्री केदारनाथ कश्यप, मंत्री	आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास, पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक विकास, स्कूल शिक्षा
6.	श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय, मंत्री	राजस्व एवं आपदा प्रबंधन, पुनर्वास, उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं जनशक्ति नियोजन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी
7.	श्री पुन्नूलाल मोहले, मंत्री	खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण, ग्रामोद्योग, 20 सूत्रीय कार्यान्वयन एवं योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग
8.	श्री राजेश मूणत, मंत्री	लोक निर्माण, आवास एवं पर्यावरण, परिवहन
9.	श्री रामसेवक पैकरा, मंत्री	गृह, जेल एवं लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी
10.	श्रीमती रमशीला साहू, मंत्री	महिला एवं बाल विकास एवं समाज कल्याण
11.	श्री दयालदास बघेल, मंत्री	सहकारिता, संस्कृति एवं पर्यटन विभाग
12.	श्री भैयालाल राजवाड़े, मंत्री	श्रम, खेल एवं युवा कल्याण, जन शिकायत निवारण
13.	श्री महेश गागड़ा, मंत्री	वन, विधि और विधायी कार्य विभाग

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

संसदीय सचिवों की सूची

1.	श्री अंबेश जांगड़े	आदिम जाति विकास मंत्री से संबद्ध
2.	श्री लाभचन्द बाफना	गृह मंत्री से संबद्ध
3.	श्री लखन देवांगन	खाद्य मंत्री से संबद्ध
4.	श्री मोतीराम चन्द्रवंशी	मुख्यमंत्री से संबद्ध
5.	श्रीमती रूपकुमारी चौधरी	महिला एवं बाल विकास मंत्री से संबद्ध
6.	श्री शिवशंकर पैकरा	पंचायत मंत्री से संबद्ध
7.	श्रीमती सुनीति सत्यानन्द राठिया	उद्योग मंत्री से संबद्ध
8.	श्री तोखन साहू	कृषि मंत्री से संबद्ध
9.	श्रीमती चम्पादेवी पावले	वन मंत्री से संबद्ध
10.	श्री गोवर्धन सिंह मांझी	राजस्व मंत्री से संबद्ध
11.	श्री राजू सिंह क्षत्रीय	लोक निर्माण मंत्री से संबद्ध

.....

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सदस्यों की वर्णात्मक सूची

(निर्वाचन क्षेत्र का नाम तथा क्रमांक सहित)

अ

01.	अजय चन्द्राकर	57-कुरूद
02.	अमर अग्रवाल	30-बिलासपुर
03.	अमरजीत भगत	11-सीतापुर (अ.ज.जा.)
04.	अरूण वोरा	64-दुर्ग शहर
05.	अवधेश सिंह चंदेल	69-बेमेतरा
06.	अंबेश जांगड़े	38-पामगढ़ (अ.जा.)
07.	अनिला भेंडिया, श्रीमती	60-डौंडी लोहारा (अ.ज.जा.)
08.	अमित जोगी	24-मरवाही (अ.ज.जा.)
09.	अशोक साहू	72-कवर्धा

उ

1.	उमेश पटेल	18-खरसिया

क

01.	कवासी लखमा	90-कोन्टा (अ.ज.जा.)
02.	केशव चन्द्रा	37-जैजैपुर
03.	केदारनाथ कश्यप	84-नारायणपुर(अ.जा.जा.)
04.	केराबाई मनहर, श्रीमती	17-सारंगढ़ (अ.जा.)

ख

01	खिलावन साहू,डा.	35-सक्ती
02.	खेलसाय सिंह	04-प्रेमनगर

ग

01.	गिरवर जंघेल	73-खैरागढ़
02.	गुरूमुख सिंह होरा	58-धमतरी
03.	गोवर्धन सिंह मांझी	55-बिन्द्रानवागढ़ (अ.ज.जा.)
04.	गौरी शंकर अग्रवाल	44-कसडोल

च

01.	चम्पादेवी पावले, श्रीमती	01-भरतपुर-सोनहत (अ.ज.जा.)
02.	चिन्तामणी महाराज	09-लुण्ड्रा (अ.ज.जा.)
03.	चुन्नीलाल साहू	33-अकलतरा

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

04.	चुन्नीलाल साहू	41-खल्लारी
	ज	
01.	जनकराम वर्मा	45-बलौदा बाजार
02.	जयसिंह अग्रवाल	21-कोरबा
	ट	
01.	टी.एस.सिंहदेव	10-अम्बिकापुर
	त	
01.	तेजकुंवर गोवर्धन नेताम,श्रीमती	78-मोहला-मानपुर(अ.ज.जा.)
02.	तोखन साहू	26-लोरमी
	द	
01.	दयालदास बघेल	70-नवागढ़ (अ.जा.)
02.	दलेश्वर साहू	76-डोंगरगांव
03.	दिलीप लहरिया	32-मस्तूरी (अ.जा.)
04.	दीपक बैज	87-चित्रकोट(अ.ज.जा.)
05.	देवती कर्मा, श्रीमती	88-दन्तेवाड़ा (अ.ज.जा.)
06.	देवजी भाई पटेल	47-धरसींवा
	ध	
01.	धनेन्द्र साहू	53-अभनपुर
	न	
01.	नवीन मारकण्डेय	52-आरंग (अ.जा.)
	प	
01.	पारसनाथ राजवाड़े	05- भटगांव
03.	पुन्नूलाल मोहले	27-मुंगेली (अ.जा.)
02.	प्रीतम राम, डा.	08-सामरी (अ.ज.जा.)
04.	प्रेमप्रकाश पाण्डेय	65-भिलाई नगर
	ब	
01.	बद्रीधर दीवान	31-बेलतरा
02.	बृहस्पत सिंह	07-रामानुजगंज (अ.ज.जा.)
03.	बृजमोहन अग्रवाल	51-रायपुर नगर(दक्षिण)
04.	बर्नाड जे.रोड्रीग्स	नाम निर्दिष्ट

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

भ

01.	भईयालाल राजवाड़े	03-बैकुण्ठपुर
02.	भूपेश बघेल	62-पाटन
03.	भैयाराम सिन्हा	59-संजारी बालौद
04.	भोजराज नाग	79-अंतागढ़ (अ.ज.जा.)
05.	भोलाराम साहू	77-खुज्जी

म

01.	महेश गागड़ा	89-बीजापुर(अ.ज.जा.)
02.	मनोज सिंह मण्डावी	80-भानुप्रतापपुर (अ.ज.जा.)
03.	मोहन मरकाम	83-कोण्डागांव (अ.ज.जा.)
04.	मोतीराम चन्द्रवंशी	71-पंडरिया
05.	मोतीलाल देवांगन	34-जांजगीर-चांपा

य

01.	युध्दवीर सिंह जूदेव	36-चन्द्रपुर

र

01.	रमन सिंह, डॉ.	75-राजनांदगांव
02.	रमशीला साहू, श्रीमती	63-दुर्ग ग्रामीण
03.	रामदयाल उइके	23-पाली-तानाखार(अ.ज.जा.)
04.	रामलाल चौहान	39-सराईपाली (अ.जा.)
05.	राजशरण भगत	12-जशपुर(अ.ज.जा.)
06.	रामसेवक पैकरा	06-प्रतापपुर (अ.ज.जा.)
07.	राजमहंत सांवलाराम डाहरे	67-अहिवारा (अ.जा.)
08.	राजू सिंह क्षत्री	28-तखतपुर
09.	राजेश मूणत	49-रायपुर नगर (पश्चिम)
10.	राजेन्द्र कुमार राय	61-गुण्डरदेही
11.	रूपकुमारी चौधरी, श्रीमती	40-बसना
12.	रेणु जोगी, डॉ0(श्रीमती)	25-कोटा
13.	रोशनलाल अग्रवाल	16-रायगढ़
14.	रोहित कुमार साय	13-कुनकुरी (अ.ज.जा.)

ल

01.	लखन देवांगन	22-कटघोरा

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

02.	लखेश्वर बघेल	85-बस्तर (अ.ज.जा.)
03.	लाभचन्द बाफना	68-साजा
04.	लालजीत सिंह राठिया	19-धरमजयगढ़ (अ.ज.जा.)

व

01.	विद्यारतन भसीन	66-वैशाली नगर
02.	विमल चोपड़ा, डा.	42-महासमुन्द

श

01.	शंकर ध्रुवा	81-कांकेर (अ.ज.जा.)
02.	श्यामलाल कंवर	20-रामपुर(अ.ज.जा.)
03.	श्यामबिहारी जायसवाल	02-मनेन्द्रगढ़
04.	शिवरतन शर्मा	46-भाटापारा
05.	शिवशंकर पैकरा	14-पत्थलगांव (अ.ज.जा.)

स

01.	सत्यनारायण शर्मा	48-रायपुर ग्रामीण
02.	सनम जांगड़े,डा.	43-बिलाईगढ़ (अ.जा.)
03.	संतराम नेताम	82-केशकाल (अ.ज.जा.)
04.	संतोष बाफना	86-जगदलपुर
05.	संतोष उपाध्याय	54-राजिम
06.	सरोजनी बंजारे, श्रीमती	74-डोंगरगढ़ (अ.जा.)
07.	सियाराम कौशिक	29-बिल्हा
08.	सुनीती सत्यानंद राठिया , श्रीमती	15-लैलूंगा (अ.ज.जा.)

श्र

01.	श्रवण मरकाम	56-सिहावा(अ.ज.जा.)
02.	श्रीचंद सुंदरानी	50-रायपुर नगर उत्तर

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

छत्तीसगढ़ विधान सभा

मंगलवार, दिनांक 11 सितम्बर, 2018

(भाद्रपद 20, शक संवत् 1940)

विधानसभा पूर्वाह्न 11.02 बजे समवेत हुई

(अध्यक्ष महोदय (श्री गौरीशंकर अग्रवाल) पीठासीन हुए)

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

राष्ट्रगीत

अध्यक्ष महोदय :- अब राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" होगा । माननीय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रगीत के लिये कृपया अपने स्थान पर खड़े हो जायें ।

(राष्ट्रगीत "वंदे मातरम्" की धुन बजाई गई)

समय :
11:03 बजे

निधन का उल्लेख

1. श्री बलरामजी दास टंडन, राज्यपाल, छत्तीसगढ़
2. श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री
3. श्री सोमनाथ चटर्जी, लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष
4. डॉ. रामचन्द्र सिंहदेव, छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व मंत्री

अध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यंत दुख हो रहा है कि छत्तीसगढ़ के राज्यपाल माननीय श्री बलरामजी दास टंडन का दिनांक 14 अगस्त 2018, भारत के पूर्व प्रधान मंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी का दिनांक 16 अगस्त, 2018, लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष, माननीय श्री सोमनाथ चटर्जी का दिनांक 13 अगस्त, 2018 एवं छत्तीसगढ़ शासन के पूर्व मंत्री, डॉ. रामचंद्र सिंहदेव का दिनांक 20 जुलाई, 2018 की देर रात्रि 2:00 बजे निधन हो गया है ।

नीरमणी\11-09-2018\a10\11.00-11.05

श्री बलरामजी दास टंडन का जन्म 1 नवम्बर सन् 1927 को पंजाब राज्य के अमृतसर में हुआ था । आपने पंजाब विश्वविद्यालय, लाहौर से स्नातक तक की उपाधि प्राप्त की थी । आपके सार्वजनिक जीवन की शुरूआत सन् 1953 में अमृतसर नगर निगम में पार्षद के रूप में हुई । पश्चात् सन् 1957, 1962, 1967, 1969 तथा 1977 में पंजाब विधान सभा के लिये सदस्य निर्वाचित हुए । आपने पंजाब सरकार के मंत्री मंडल में वरिष्ठ केबिनेट मंत्री के रूप में उद्योग, स्वास्थ्य, स्थानीय शासन, श्रम एवं रोजगार जैसे अनेक महत्वपूर्ण विभागों में अपने दायित्वों का कुलतापूर्वक निर्वहन किया । आप सन् 1979 से 1980 के बीच पंजाब विधानसभा में विपक्ष के नेता रहे । ....जारी

...........श्री यादव

यादव\11-09-2018\a11\11.05-11.10

..................(जारी अध्यक्ष महोदय) :- आप सन् 1979 से 1980 के मध्य पंजाब विधान सभा में विपक्ष के नेता भी रहे । आप आपातकाल के दौरान जेल भी गये । आपने देश के विभाजन के समय पाकिस्तान से आने वाले विस्थापितों के लिये मूलभूत बुनियादी सुविधाओं को उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया । आपने दिनांक 25 जुलाई, 2014 को छत्तीसगढ़ के राज्यपाल का पदभार संभाला था । आप सदैव सहज रूप से सभी के लिये उपलब्ध रहते थे । आपका दीर्घकालीन राजनैतिक जीवन देश एवं प्रदेश की आम जनता की भलाई तथा उनके विकास के लिये समर्पित रहा ।

विधान सभा अध्यक्ष के रूप में विभिन्न विषयों में मुझे आपका मार्गदर्शन तथा एक अभिभावक के रूप में मुझे आपका आत्मीय स्नेह एवं सानिध्य हमेशा प्राप्त हुआ ।

आपके निधन से देश तथा प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनेता, कुशल प्रशासक तथा समाजसेवी को खो दिया है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर सन् 1924 को मध्य प्रदेश राज्य के ग्वालियर में हुआ था । आपने राजनीतिक विज्ञान में एम.ए. किया था । आप छात्र जीवन से ही

अशासकीय प्रकाशन के लिये नहीं

रचनात्मक कार्यों से जुड़े रहे । आपने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया । आप भारतीय जनसंघ, जनता पार्टी तथा भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य थे । आप आपातकाल के दौरान मीसा के तहत् बंदी भी रहे । आपने सन् 1980 से 1986 तक भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद का दायित्व भी संभाला ।

आप प्रथम बार 1957 में दूसरी लोक सभा के लिये जनसंघ पार्टी की टिकट पर सांसद निर्वाचित हुए । तद्न्तर 1967, 1971, 1977, 1980, 1991, 1996, 1998, 1999 तथा 2004 में लोक सभा के लिये निर्वाचित हुए । आप सन् 1962 तथा 1986 में राज्य सभा के सदस्य भी चुने गये । आपने सन् 1977 में केंद्रीय विदेश मंत्री रहते हुए विदेश में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की ख्याति बढ़ाई । संयुक्त राष्ट्र संघ में पहली बार हिन्दी में ओजस्वी उद्बोधन देकर विश्व में मातृभाषा को पहचान दिलाई । आप सन् 1993 से 1996 तक लोक सभा में प्रतिपक्ष के नेता रहे । आप प्रथम बार दिनांक 16 मई, 1996 से दिनांक 31 मई, 1996 तक, द्वितीय बार 1998 से 1999 तक तथा तृतीय बार अक्टूबर, 1999 से मई, 2004 तक देश के प्रधानमंत्री रहे । आपने दुनिया भर में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाई तथा देश की समृद्धि एवं विकास के लिये अनेक कठोर निर्णय लिये । आपने पोखरण में सफल परमाणु परीक्षण कर भारत को दुनिया के शक्तिशाली देशों के समकक्ष खड़ा कर दिया । आपने द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों को पक्की सड़कों से जोड़ने हेतु प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना प्रारंभ की गई । देश के गांव में रहने वाले लोग इसे हमेशा याद रखेंगे । साथ ही वर्ष 2001 में आपके ही प्रयास से भारत की सबसे बड़ी तथा विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी राजमार्ग परियोजना "स्वर्णिम चतुर्भज" की परिकल्पना की गई जिसके माध्यम से देश के प्रमुख शहरों को वर्ष 2012 तक छः लेन तथा चार लेन 5846 किलोमीटर सड़कों को जोड़ा गया ।

आप छः अलग अलग निर्वाचन क्षेत्रों से दस बार लोक सभा तथा दो बार राज्यसभा के लिये निर्वाचित हुए । आप लगभग 50 साल सांसद रहे, जो अपने आप में सबसे ज्यादा समय तक सांसद रहने का रिकॉर्ड है । आप एक ऐसे सर्वमान्य राजनीतिज्ञ रहे, जिनकी विपक्ष में रहने के बावजूद पं.जवाहरलाल नेहरू प्रशंसा करते थे । श्रीमती इंदिरा गांधी जी देश के जटिल मसलों पर राजनीतिक सलाह लेती थीं । श्री पी.व्ही. नरसिम्हाराव जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिये उन्हें भेजा था ।

अप्रमाणित/प्रकाशन के लिए नहीं

अटल जी का छत्तीसगढ़ क्षेत्र के प्रति विशेष स्नेह रहा जिसके कारण उन्होंने दिनांक 01 नवम्बर, 2000 को नये राज्य के रूप में छत्तीसगढ़ की जनता को छत्तीसगढ़ राज्य का तोहफा दिया । छत्तीसगढ़ राज्य की जनता राज्य निर्माता के रूप में आपको सदैव याद रखेगी । राष्ट्र के प्रति आपकी सेवाओं के सम्मान में आपको भारत के सर्वोच्च सम्मान "भारत रत्न" से भी सम्मानित किया गया।

मुझे आपका सानिध्य, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद हमेशा प्राप्त होता रहा ।

आपने उच्च पदों पर रहते हुए ऐसी परम्पराएं बनाईं जिसका अनुसरण वर्षों तक किया जाता रहेगा । आपके निधन से देश ने वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, कवि, लेखक, चिंतक, बहुभाषाविद्, कुशल प्रशासक, संसदविज्ञ तथा देश के सर्वमान्य नेता को खो दिया है ।

श्री सोमनाथ चटर्जी का जन्म 23 जुलाई सन् 1929 को असम के तेजपुर में हुआ था । आपने एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी । आप प्रारंभ से राजनैतिक तथा सामाजिक कार्यों से जुड़े रहे । आप प्रथम बार सन् 1971 में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की टिकट पर सांसद निर्वाचित हुए । आप दस बार लोक सभा सदस्य निर्वाचित हुए । आपको सन् 1996 में "उत्कृष्ट सांसद" पुरस्कार के रूप में सम्मानित किया गया । आप सन् 2004 से 2009 तक लोक सभा के अध्यक्ष रहे । आपके कार्यकाल के दौरान ही लोक सभा चैनल अस्तित्व में आया ।

.....(जारी) श्री मिश्रा

मिश्रा\11-09-2018\a12\11.10-11.15

अध्यक्ष महोदय...जारी..अस्तिव में आया। अपनी कुशल राजनीतिक समझ, निष्पक्ष तथा निडर वक्ता के रूप में आपने भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान बनाया। आपके निधन से देश ने एक वरिष्ठ तथा अनुभवी राजनेता, संसदविज्ञ, प्रशासक तथा समाजसेवी को खो दिया है।

डॉ. रामचन्द्र सिंहदेव का जन्म 13 फरवरी सन् 1930 को कोरिया रियासत की राजधानी बैकुंठपुर के राज परिवार में हुआ था। आप छात्र जीवन से राजनैतिक कार्यों से जुड़े रहे। आपने पी.एच.डी. की उपाधि भी प्राप्त की थी। आप प्रथम बार सन् 1967 में तदन्तर 1972, 1990, 1993, 1998 में अविभाजित मध्यप्रदेश विधान सभा तथा वर्ष 2003 में छत्तीसगढ़ विधान सभा

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

के लिये सदस्य निर्वाचित हुए तथा अविभाजित मध्यप्रदेश शासन में अनेक महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री रहे। आप अविभाजित मध्यप्रदेश में राज्य योजना मंडल के उपाध्यक्ष भी रहे। सन् 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पश्चात छत्तीसगढ़ की प्रथम विधान सभा में वित्त, योजना, वाणिज्यिक कर, आर्थिक एवं सांख्यिकी, बीस सूत्रीय कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्री के पद का दायित्व संभाला। आप सिंचाई क्षेत्र के विशेषज्ञ माने जाते थे। आपने बड़े बांधों के खतरों से विश्व को सचेत किया और छोटे बांधों से जल संग्रहण की योजना को प्रोत्साहित किया। आप अनेक नीतिगत योजनाओं के सूत्रधार, आर्थिक मामलों के जानकार एवं पर्यावरण विशेषज्ञ थे। आपकी फोटोग्राफी में विशेष अभिरूचि थी। आपका सुदीर्घ सार्वजनिक जीवन सादगी, ईमानदारी तथा शुचिता से परिपूर्ण था।

सन् 1998 से 2003 के मध्य मुझे उनके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ। छत्तीसगढ़ राज्य गठन के पश्चात् प्रथम वित्त मंत्री के रूप में उनका सहयोग एवं मार्गदर्शन मुझे हमेशा प्राप्त हुआ।

आपके निधन से प्रदेश ने एक अनुभवी राजनेता, प्रशासक तथा समाजसेवी को खो दिया है।

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, डेंगू से भी लगातार अभी तक 38 लोगों की मौत हो चुकी है, उसको भी सम्मिलित कर देते।

श्री सत्यनारायण शर्मा (रायपुर ग्रामीण) :- अध्यक्ष महोदय, जब डेंगू का शामिल कर रहे हैं तो जाईंडिस से बहुत लोग मरे हैं और हमारे कई सैनिक नक्सलाईड द्वारा हत्याकांड में शहीद हुए हैं, उनको भी जोड़ दें।

श्री अरूण वोरा (दुर्ग शहर) :- अध्यक्ष महोदय, दुर्ग-भिलाई में डेंगू से 46 मौतें हो चुकी हैं, मैं मुख्यमंत्री जी से मार्मिक निवेदन करूंगा कि मुख्यमंत्री जी वहां का दौरा करें।

मुख्यमंत्री (डॉ. रमन सिंह) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, जुलाई के प्रथम सप्ताह के बाद आज के सदन के समवेत होने के बीच एक के बाद इस देश की अनेक महान विभूतियों को हमने खो दिया है। आज जिन विभूतियों का उल्लेख आपने किया, आपके शब्द और भावना के साथ मैं स्वयं को, सदन को और प्रदेशवासियों को इसमें सहभागी बनाता हूं।

असंशोधित/अप्रकाशन के लिये नहीं

सर्वप्रथम हमारे प्रदेश के पूर्व राज्यपाल, वयोवृद्ध समाजसेवी श्री बलरामजी दास टंडन जी जो न केवल हमारे प्रदेश के संवैधानिक मुखिया के रूप में इस सदन के अविभाज्य अंग होते हैं उस रूप में महत्वपूर्ण रहे हैं बल्कि उनका व्यक्तित्व सरल, निश्छल लेकिन अपने संकल्प में अडिग, वह हम सबके अभिभावक के समान थे। स्वर्गीय टंडन जी ने अपने 91 साल की उम्र में 65 साल सार्वजनिक जीवन के रूप में विभिन्न भूमिकाओं में जनता के बीच अपनी भूमिका निभाई। 1975 से 1977 के बीच जब देश में आपातकाल लगा, उस समय वह जेल में रहे। 1953 से लेकर 1967 तक उन्होंने अमृतसर में नगर निगम के पार्षद के रूप में अपनी भूमिका निभाई। उन्होंने विधायक के रूप में 1957, 1962, 1967, 1969, 1977 में अमृतसर में और 1997 में राजपुर का प्रतिनिधित्व किया। केबिनेट मंत्री के रूप में उनकी भूमिका रही। चुनौती को सामना करने का उनका व्यक्तित्व रहा है। जब 1991 में लोकसभा का चुनाव हुआ और पंजाब में चुनौती थी कि उस लोकसभा को अमृतसर से कौन लड़ सकता है तो उस चुनौती का मुकाबला करने के लिए टंडन जी ने अपने आपको झोंका। इस अमृतसर लोकसभा चुनाव अभियान के दौरान, सर्वाधिक आतंक से पीड़ित वह क्षेत्र, लगातार इनके ऊपर आक्रमण हुए, मगर ये झुके नहीं, डरे नहीं और उस चुनाव में उन्होंने भाग लिया। 1947 में देश के विभाजन की पीड़ा को न केवल उन्होंने झेला बल्कि उस समय उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही। 1965 के पाकिस्तान- भारत युद्ध में अमृतसर की सीमा में उन्होंने एक आत्मबल बढ़ाने के लिए जनसामान्य की दृष्टि से लगातार संपर्क किया। उन्होंने आतंकवाद से पीड़ित परिवारों को सहायता करने के लिए लगातार एक कमेटी का गठन किया और उस फोरम के वह अध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे। उनके परिजनों के प्रति, प्रदेशवासियों के प्रति और पूरे देश में फैले हुए उनके चाहने वालों के प्रति हम अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं और उनको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। जारी..........

श्री कुरैशी

कुरैशी\11-09-2018\a13\11.15-11.20

जारी..........डॉ0 रमन सिंह :- माननीय अध्यक्ष महोदय, देश के पूर्व प्रधानमंत्री और छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता, भारत रत्न श्री अटलबिहारी बाजपेयी, हम सबके गुरू और पिता तुल्य थे । उनके निधन से सवा करोड़ भारतीयों की तरह मैं भी स्तब्ध और विचलित हूं । स्वर्गीय अटलबिहारी बाजपेयी की गिनती भारत ही नहीं, दुनिया के शीर्ष नेताओं में होती है ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

उनके निधन से निश्चित रूप से राजनीति के एक अध्याय का अंत हुआ है। वे भारतीय समाज के सभी वर्गों में समान रूप से लोकप्रिय थे । पक्ष और विपक्ष की सीमाओं को तोड़कर राजनीति के क्षेत्र में कोई व्यक्ति लगातार 50 साल, 55 साल अपनी लोकप्रियता के ग्राफ को लगातार मेंटेन करे, शायद दुनिया में ऐसा कोई राजनेता नहीं होगा जो अटल जी का मुकाबला कर सके, इतनी लोकप्रियता उनकी रही। 50 साल के संसदीय जीवन में विलक्षण रूप से उनकी क्षमता को लोगों ने देखा। उनकी लोकप्रियता की सीमा सभी को पार कर गई । 1996, 1998 और 1999 में प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश को न केवल कुशल नेतृत्व दिया, बल्कि उस दौर की सबसे बड़ी उपलब्धि छत्तीसगढ़ की ढाई करोड़ जनता ने राज्य के निर्माण के बाद, हम सबको लगता है कि हमने अपने राज्य के निर्माता को खो दिया । हम सबको याद है 1998 में एक विशाल सभा उन्होंने छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण का वायदा किया था तो लोगों को लगता था कि यह एक राजनीतिक भाषण है, चुनाव भाषण है । चुनावी वायदा करके माननीय अटलबिहारी वाजपेयी जी भूल जाएंगे, लेकिन सन् 2000 में उन्होंने अपने वायदे को पूरा करके एक नया राज्य के साथ तीन राज्य के निर्माण का रास्ता प्रशस्त किया । 2004 में राज्य स्थापना दिवस के अवसर पर वे छत्तीसगढ़ आए थे, आज भी मुझे याद है उन्होंने कहा था कि राज्य के निर्माण के लिए मुझे धन्यवाद् मत दीजिए, यदि राज्य के निर्माण का कोई जवाबदार है तो छत्तीसगढ़ की ढाई करोड़ जनता है । इस तरह उन्होंने राज्य निर्माण का क्रेडिट न लेकर, छत्तीसगढ़ की जनता को ही क्रेडिट दिया । प्रदेशवासियों से लगातार उनका सम्पर्क और जुड़ाव रहा । 2002 में बिलासपुर के सीपत में 1980 मेगावाट के विशाल सुपर थर्मल बिजली प्लांट की बुनियाद रखी । 2005 में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता तथा जनसम्पर्क विश्वविद्यालय का शुभारंभ किया । उसी दिन रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के 11वें दीक्षान्त समारोह में शामिल हुए और पंचायती राज सम्मेलन को सम्बोधित किया । उन्होंने विवेकानंद जी की प्रतिमा का अनावरण भी किया । 1977-78 में विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में हिंदी में भाषण देकर उन्होंने भारत की राष्ट्रभाषा का सम्मान बढ़ाया । 1998 में पोखरण में परमाणु परीक्षण करके भारत को विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में स्थापित किया । झारखंड, उत्तराखंड, छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण कर एक नए राजनीतिक युग का प्रवर्तन किया । 1999 से 2003 के बीच तत्कालीन प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में मुझे दिल्ली में केन्द्र सरकार में रहने का अवसर मिला । 1999 से 2003 मेरे जीवन के अमूल्य क्षण होंगे, जिसमें मंत्री के रूप में उनसे बहुत कुछ

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

सीखने का अवसर मिला । एक ओजस्वी वक्ता, एक संवेदनशील कवि, सिद्धान्तवादी एवं सहृदय नेता का साथ, नेता प्रतिपक्ष की भूमिका में, जनसंघ के अध्यक्ष की भूमिका में, भारतीय जनता पार्टी के निर्माण के समय हमने उनका स्वरूप देखा । 1980 के बाद उनकी सभी भूमिका में निश्चित रूप से इस देश की राजनीति में जो खालीपन आया है उसकी पूर्ति असंभव है । प्रधानमंत्री जी ने गांव, गरीब, किसान को प्राथमिकता में रखा । प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, उनकी महत्वपूर्ण योजनाओं में से एक थी । इसके साथ ही सर्वशिक्षा अभियान, इस देश में शिक्षा का अलख जगाने का काम, सवर्णिम चतुर्भुज की शुरूआत माननीय अटलबिहारी बाजपेयी ने की । अटल जी की यादों को संजोने के लिए छत्तीसगढ़ में हमने नया रायपुर का नाम अटल नगर कर दिया है, ताकि आने वाली पीढ़ियां छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता को जान सके और नया रायपुर को अटल नगर के रूप में प्रतिष्ठा मिले । वहां स्थित सेंट्रल पार्क, बिलासपुर विश्वविद्यालय, राजनांदगांव मेडिकल कॉलेज, मड़वा ताप बिजली परियोजना और रायपुर शहर का एक्सप्रेस हाइवे के नामकरण का भी निर्णय लिया है । छत्तीसगढ़ ....जारी

-- श्री अग्रवाल --

अग्रवाल\11-09-2018\a14\11.20-25

जारी...डॉ. रमन सिंह :- निर्णय लिया है । छत्तीसगढ़ सशस्त्र वर्ग के बटालियन का नाम पोखरण बटालियन किया गया है । राज्योत्सव को 1 नवम्बर को त्रिस्तरीय पंचायती राज और नगरीय निकायों में अटल बिहारी वाजपेयी सुशासन पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया है । सभी जिला मुख्यालयों में अटल जी की प्रतिमा लगाई जाएगी । छत्तीसगढ़ बोर्ड की पुस्तकों में अटल जी की जीवनी पढ़ाई जाएगी और इस प्रकार अटल नगर में एक भव्य अटल स्मारक बनाने का भी संकल्प हमने लिया है। मैं स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, पूर्व लोकसभा अध्यक्ष स्वर्गीय सोमनाथ चटर्जी के निधन से देश ने एक संसदीय लोकतंत्र के महान चिंतक, विचारक, विद्वान राजनेता, सुयोग्य अनुभवी प्रशासक और कर्मठ जन प्रतिनिधि खोया है । स्वर्गीय चटर्जी जी 14 नवम्बर, 2005 को देश के सभी विधान सभा और विधान परिषदों के अध्यक्षों के पीठासीन अधिकारियों और सचिवों के 5 दिवसीय सम्मेलन के शुभारंभ में रायपुर आये थे । चटर्जी ने सम्मेलन में नागरिक एवं सरकार

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

के बीच मध्यस्थ के रूप में सदस्यों की भूमिका विषय पर प्रेरक व्याख्यान दिया । चटर्जी जी ने छत्तीसगढ़ के विकास में काफी दिलचस्पी दिखाई थी । नई राजनीतिक तरक्की और खुलापन में शुभेच्छा व्यक्त की थी । श्री चटर्जी के लोकप्रियता का उदाहरण ये है कि 10 बार सांसद रहने की उनकी लोकप्रियता का ये मापदण्ड बताता है । मुझे एक सांसद के रूप में, वरिष्ठ लोकसभा सदस्य और सोमनाथ दादा के साथ काम करने का अवसर मिला । उन्होंने 2004 से 2009 तक लोकसभा के अध्यक्ष के रूप में अत्यंत कुशलता से लोकसभा का संचालन किया । मैं स्वर्गीय सोमनाथ चटर्जी के परिवार के प्रति अपनी संवेदना प्रकट करता हूं और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय डा. रामचन्द्र सिंहदेव जी का सुदीर्घ जीवन सभी लोगों के लिए सादगी और सूचता का प्रेरणादायक हमेशा रहेगा । सजग, कर्मठ जनप्रतिनिधि के रूप में डा. रामचन्द्र सिंहदेव ने पांच दशक के राजनीतिक जीवन में सादगी और जनता की सेवा को अपना लक्ष्य बनाया । तात्कालीक अविभाजित मध्यप्रदेश में विभिन्न मंत्री के पद में रहते हुए 2000 में नवगठित छत्तीसगढ़ में वित्त मंत्री की भूमिका निभाई, जिसे हम हमेशा याद करेंगे । वे ऐसे तो राजपरिवार कोरिया से ताल्लुक रखते थे, लेकिन राजा के रूप में नहीं, बल्कि उन्होंने फकीर की तरह अपना पूरी जीवन जीया । वे पक्ष, विपक्ष में समान रूप से लोकप्रिय थे । छत्तीसगढ़ की जनता और आने वाली पीढ़ी उन्हें हमेशा याद करेगी । एक विद्वान, अर्थशास्त्री, चिंतक, पर्यावरण और जल संरक्षण विषयों पर गहरी पकड़ रखने वाले मध्यप्रदेश की सिंचाई योजना छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की जितनी बड़ी सिंचाई योजनाओं में कहीं न कहीं उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है और उनको हम याद करते हैं । एक फोटोग्राफर के रूप में उनकी भूमिका लगातार रही है और पिछले तीन महीने पहले तक लगातार कोई सप्ताह ऐसा नहीं जाता था, जब अपने हाथ से लिखकर छत्तीसगढ़ सरकार के डेव्हलपमेंट के बारे में, बस्तर प्लान के बारे में, सरगुजा प्लान के बारे में, पर्यावरण के बारे में पत्र न भेजते हों और पत्र भेजने के साथ-साथ महीना, 15 दिन में आकर अपने सुझाव और सलाह भी देते रहते थे । हमने एक लोक हितैषी राजनेता और कुशल प्रशासक को हमेशा के लिए खो दिया है । मेरी संवेदनाएं स्वर्गीय रामचन्द्र सिंहदेव के परिवार के साथ है । ईश्वर उन्हें आत्मिक शांति प्रदान करे ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री टी. एस. सिंहदेव) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, छत्तीसगढ़ ने कार्यशील अपने राज्यपाल महोदय को खोया । विपक्ष के प्रतिनिधि के नाते भी कई अवसरों में उनके पास

असंपादित/प्रकाशन के लिये नहीं

जाने का अवसर मिला, उनसे भेंट करने का अवसर मिला । छत्तीसगढ़ की ज्वलंत और विवादित मुद्दों से उनको परिचित कराने का, उनकी राय लेने का, उनका संरक्षण मांगने का अवसर मिला और अपने जीवनकाल में भले ही वे विभिन्न राजनैतिक दल और विचारधारा से सम्बन्ध रखते हों, लेकिन हम लोगों को महसूस हुआ कि वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे । वे सुनना चाहते थे, समझकर उसमें पहल करने की इच्छा रखते थे और कई मौकों पर उन्होंने ऐसा किया भी । आदिवासी समाज से जुड़ी हुई बातों को लेकर, सदन में पारित विधेयकों को लेकर अन्य ऐसे ज्वलंत अनेक मुद्दे आये कि जब हम लोग उनके पास गए तो उन्होंने अच्छे से बातों को सुना और पहल भी की । हमने अपने राजयपाल को खोया.... जारी.....

श्री देवांगन

देवांगन\11-09-2018\a15\11.25-11.30

जारी... श्री टी.एस. सिंहदेव :- जब हम लोग उनके पास गये तो उन्होंने बातों को अच्छे से सुना और पहल भी की। हमने अपने राज्यपाल को खोया। उनके ऊपर उम्र का दबाव था, शारीरिक सीमाएं रहीं, लेकिन उसके बावजूद ऐसे हर अवसर को उन्होंने सुशोभित किया, चाहे विधान सभा की कार्यवाहियां हों, अन्य परिस्थितियां हों, अन्य कार्यक्रम हों और आज वे हमारे बीच में नहीं रहे। उनके भरे पूरे जीवन में समाज को और राजनीतिक मंच के माध्यम से देश-प्रदेश को उनका योगदान मिला। हम उन्हें स्मरण करते हैं। उनकी आत्मा की शांति की कामना करते हैं।

भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी जी देश के तीन बार प्रधानमंत्री का शपथ लेने वाले, 6 वर्षों से अधिक समय तक प्रधानमंत्रित्व का कार्य करने वाले हमारे देश के एक अगुआ नेता रहे। वे भी संयोग से विपक्षी दल के थे, लेकिन मेरे मन में यही भाव आता है एक राजनीतिक दल के व्यक्ति के होते हुए तो आदमी कभी नहीं चाहता कि दूसरे दल का व्यक्ति आये, लेकिन विपक्ष का अगर कोई प्रधानमंत्री हो तो अटल जी जैसा हो। उनकी विचारशीलता, उनका स्वभाव, उनकी भाषण की अद्‌वितीय शैली, कम उम्र से ही राजनीति से पूरा परहेज रखने वाला एक युवा मैं भी था और उस समय भी हम लोग, मुझे याद है भोपाल में हम लोग क्रिकेट खेला करते थे, टूर्नामेंट में भाग लिया करते थे। एक बार जा रहे थे, शाम हो गयी थी। साथ के लोग मिले, हम चर्चा कर रहे थे। मैं कहा, मैं घर जा रहा हूं। आप लोग कहां जा रहे हैं ? नहीं, हम लोग भाषण

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिये नहीं

सुनने के लिए जा रहे हैं। कौन भाषण, कहां भाषण सुनने जाओगे? नहीं, अटल बिहारी आ रहे हैं, अटल बिहारी का भाषण सुनने जा रहे हैं। तो उनके भाषण शैली का एक ऐसा प्रभाव था कि अनेक विचार धारा के लोग उनको सुनने के लिए जरूर पहुंचते थे। सुनते थे, समझते थे और अपनी बातों को उनके माध्यम से फिर आगे बढ़ाने की पहल करते थे। विपक्ष में भी रहते हुए अटल जी ने जो भूमिका निभाई, मैं समझता हूं कि एक आदर्श राजनीतिक, विपक्ष के अगुआ एक अग्रणी पंक्ति में खड़े हुए व्यक्ति के रूप में अपनी भूमिका निभाई। अध्यक्ष महोदय, युवा सांसद के रूप में जब वे सामने आये, तत्कालीन प्रधानमंत्री जी ने उनमें अनेक क्षमताएं उसी समय देखी। ऐसा व्यक्ति, जो युवाकाल से संसद में प्रतिनिधित्व देता था, उसमें जैसी क्षमताएं प्रारंभिक दिनों से ही परिलक्षित होती रहीं और परिपक्व होकर वह व्यक्ति न केवल कवि हृदय बना, खुलकर अपनी बातों को रखने की क्षमता रखना, सत्तापक्ष के संदर्भ में भी अगर सही बातें रखने की परिस्थितियां बनी तो बेहिचक देश हित में व्यवस्था को और सुदृढ़ बनाने की दिशा में गंभीर जनप्रतिनिधित्व के पैमाना को स्थापित करने में, चाहे वे विपक्ष में रहे चाहे, वे सत्ता पक्ष में रहे, उनका आचरण, उनकी बातें, उनका वक्तव्य मैं समझता हूं कि अनुकरणीय है। कोई भी व्यक्ति अगर राजनीति में है तो अटल जी से भी हमको सीखना चाहिए कि विपक्ष में रहते हुए सत्ता पक्ष के लिए हम क्या बोल सकते हैं, सत्ता में रहते हुए हम उस समय के विपक्ष के लिए क्या बोल सकते हैं। देश के नेताओं के संदर्भ में, देश की परिस्थितियों के संदर्भ में कैसे खुले विचार रखकर हमको आचरण करना चाहिए। मैं समझता हूं कि अटल जी हमारे लिए हमेशा उन संदर्भों में प्रेरणा स्त्रोत रहेंगे। चाहे राजधर्म की बातें रही हों, चाहे बाबरी मस्जिद के विध्वंस के समय उनकी व्यक्त पीड़ा की बात रही हो, एक विपक्ष के सबसे ऊपर के पायदान में रहने वाले नेताओं में मैं समझता हूं कि अटल जी ने मुझे भी प्रभावित किया। आज उनके प्रति भी अपनी पूर्ण संवेदना, पूर्ण सद्भावना व्यक्त करते हुए मैं श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं।

जारी... श्रीमती सविता

सविता\11-09-2018\a16\11.30-11.35

.....जारी श्री टी.एस.सिंहदेव :- माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री सोमनाथ चटर्जी, कम्युनिष्ठ पार्टी के सदस्य, इतने बार संसद में आने वाले और जिस तरह से उन्होंने सदन को संचालित किया, मैं समझता हूँ कि वह भी देश की प्रजातांत्रिक व्यवस्थाओं में गहरी से गहरी

परम्पराओं को किस तरह से स्थापित किया जा सकता है, सदन में उनका नियंत्रण, सदन की कार्यवाही को दिशा देना, उनके प्रति सदन के सदस्यों का सम्मान इतना गहरा रहा कि मैं समझता हूँ कि यदि सदन को चलाने की परम्पराओं को हमको कहीं से सिखना है तो वह सोमनाथ चटर्जी जी की कार्यशैली और जीवनी से सिखा जा सकता है। यहां तक उनके दल ने उनके ऊपर कार्यवाही की, लेकिन उन्होंने अपने उसूलों से समझौता नहीं किया। ऐसे ही जनप्रतिनिधि हमारे देश को मिलें, मैं समझता हूँ कि हम सौभाग्यशाली रहेंगे कि ऐसे महान पुरूषों को स्मरण करते हुए, हम यही कामना करें कि वैसी बुद्धि, सद्बुद्धी, आचरण, विचार और उपस्थिति बनाने में आने वाली पीढ़ियां और हम सब सिखकर, कुछ न कुछ अपने आप को ढाल सकें। माननीय अध्यक्ष महोदय, उनकी आत्मा की शांति के लिए भी मैं दिल की गहराईयों से कामना करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. रामचन्द्र सिंहदेव, मेरी लिए कोरिया अंकल थे। मेरे पिताजी के क्लास फेलो रहे, मैं स्कूल में पढ़ता था, सिंधिया स्कूल ग्वालियर में शायद आठवीं कक्षा में था, एक दिन टीचर्स ने खबर भेजी की, कोई मिलने आया है, कोई मंत्री आपसे मिलने के लिए आया है मैंने कहा कि कभी कोई मंत्री हम लोगों से, लड़कों से मिलने के लिए स्कूल में नहीं आता, मुझसे मिलने के लिए कौन मंत्री आ गया? और मुझे जब सामने भेजा गया तो कोरिया अंकल खड़े हुए थे। मैंने कहा कि ये मंत्री नहीं, ये तो कोरिया अंकल हैं तो हम लोगों के लिए घर का एक ऐसा व्यक्ति जो राजकुमार कॉलेज में पिताजी के साथ पढ़े, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में साथ रहें। वहां उनका एक ग्रुप था, उन लोग बताया करते थे कि उसमें वी.पी.सिंह जी, मेरे ख्याल से विश्वनाथ प्रताप सिंह जी भी थे, एक आयु के ये 4-5 लोग थे, जो साथ में वहां इलाहाबाद यूनिवर्सिटी में थे और बचपन से उनकी बातें हम लोग सुना करते थे।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं जब भोपाल में पढ़ने के लिए रहा तो वहां कई अवसरों पर अंकल रहते थे, अंकल को खाना बनाने का भी बड़ा शौक था, वे बैठ जाएं, स्टूल लगा लें, चूल्हा बुला लें और अलग-अलग किस्म के खाना बना रहे हैं, हम लोगों को उनके चरित्र के अनेक पहलू उससे परिचित होने का अवसर मिला। एक बेहद ईमानदार और विचारवान जनप्रतिनिधि जो राजनीति से बहुत दूर रहा, एक तरह से पकड़ कर बुलाया गया, ये भी लाल झण्डे के करीब थे, कम्युनिष्ट पार्टी की विचारधारा से जुड़े रहे, कभी उन्होंने अपना कोई ऐसा विचार व्यक्त कर दिया, जैसा कि अभी माननीय मुख्यमंत्री जी ने भी कहा कि वे अपनी बातों को बेबाकी से रखा

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

करते थे तो वहां भी शायद उनके ऊपर ऐसी कोई कार्यवाही हुई या उस दल से भी वे पृथक हुए और द्वारिका प्रसाद मिश्रा जी के समय जब कई मौकों पर लोगों को ढूंढा जाता है कि अच्छे लोगों को लाओ, जोड़ो, उस समय उनको कांग्रेस पार्टी से चुनाव लड़ने के लिए बुलाया गया, याद किया गया, मुझे अच्छे से याद है कि यह वर्ष 1968 की बात होगी और तब से वे प्रतिनिधित्व करते रहे, कभी चुनाव नहीं हारे और उन्होंने ऐसा आदर्श प्रस्तुत किया, आज तक मैं समझता हूँ कि उनके ऊपर इस सार्वजनिक जीवन में कोई दाग का छिंटा नहीं पड़ा होगा और लोग कहते हैं कि जब उन्होंने अंतिम चुनाव नहीं लड़ने का निर्णय लिया तो ऐसे ही कोई वाक्या हो गया कि उनसे कोई मतदाता ने कुछ ऐसी बात कह दी कि ऐसा कुछ तो हमारे लिए कर दीजिए, आजकल तो हम लोग बहुत सारी और चीजों को देख रहे हैं पर किसी ने उनको कुछ कह दिया तो उन्होंने कहा कि ये मेरे से नहीं होगा और वे चुनाव तक नहीं लड़े । आज के युग में जहां हमारा आचरण और नैतिक पतन अनेक अवसरों पर दिखता है वहां कोरिया अंकल आदरणीय डॉ. रामचन्द्र सिंहदेव, एक ऐसे विद्वान और पाक साफ जनप्रतिनिधि रहे, जिन्होंने न जाने कितनी बार लोगों की सहायता न की हो, कितनी बार प्रदेश, मध्यप्रदेश को आगे ले जाने की बात न की हो, अपनी पुस्तक में जो व्यक्ति .... जारी श्री चौधरी

चौधरी\11-09-2018\a17\11.35-11.40

पूर्व जारी.. श्री टी.एस.सिंहदेव :- मध्यप्रदेश को आगे ले जाने की बात न की हो, अपनी पुस्तक में जो व्यक्ति श्रीनगर के दल लेकर, भरकर उससे बाढ़ की स्थिति का आकलन दशकों पहले कर सकता था, चेन्नई की स्थिति का आकलन दशकों पहले कर सकता था, कैसे छोटी-छोटी इकाईयों में जल को संग्रह करके जल स्तर और कृषि को आगे बढ़ाने की बात जो व्यक्ति करता था। जिसने सोन के ऊपर बनने वाली परियोजना को समयबद्ध तरीके से पूर्ण करने में, न जाने कितने-कितने, आज सरगुजा क्षेत्र में देखें, छत्तीसगढ़ में देखें, सिंचाई की कितनी इकाईयों को उन्होंने स्थापित करके नहीं दिया होगा। एक ऐसा व्यक्ति जैसा माननीय रमन सिंह जी कह रहे थे कोई मौका नहीं चूकता था जब वह अपनी बात नहीं कहना चाहते हों। लाओ कागज लाओ, लिखो, अच्छा नहीं मैं लिखता हूं और वह अपनी बात लिखते थे। ये प्वाईन्ट, ये प्वाईन्ट, ये प्वाईन्ट, अच्छा सदन में जा रहे हो, बजट के बारे में बोलोगे, ये देखो, आओ, मेरे पास आओ। ये-ये देखो, ये-ये बातों को रखो। तो कभी गिनी कोएफिसियेन्ट के बारे में, कभी मानव सूचकांक के बारे में, कभी अन्य आंकडों के बारे में, न जाने कितने अवसरों पर वह मार्गदर्शन

अप्रकाशित/प्रकाशन के लिये नहीं

नहीं करते थे। सरगुजा प्लान, बस्तर प्लान और छत्तीसगढ़ के लिए मुझे क्या करना चाहिए, ये मेरे को शासन को बोलना चाहिए या नहीं, जैसा रमन सिंह जी कह रहे हैं वह भी बात उनमें आती थी। नहीं-नहीं अंकल आपको बिल्कुल करना चाहिए। उनके मन में हमेशा ये बात भरी रहती थी कि मैं छत्तीसगढ़ की बेहतरी के लिए कैसे योगदान दे सकता हूं। मैं क्या अपनी ओर से कर सकता हूं, जो भी परिस्थितियां हों, ये नहीं कि अब रिटायर हो गये या कोई ऐसी बातें हों गईं। नहीं, क्या मैं कर सकता हूं, यह करने में वह कभी भी पीछे नहीं रहे। एक ऐसे बहुत ही सरल स्वभाव के, बहुत ही मिलनसार व्यक्तित्व के, लोगों के लिए बहुत ही संवेदना रखने वाले ऐसे विचार के व्यक्ति को हम लोगों ने खोया। मेरे गार्डियन भी रहे, मैंने अपना गार्डियन भी खोया। खास करके पिताजी की डेथ के बाद आगे आकर उन्होंने कहा कि नहीं, मैं तुम्हारा गार्डियन हूं और उन्होंने वही भाव दिया, वही संरक्षण दिया, वही एक तरह से मेरे को भी रास्ता दिखाने का काम किया। अपने कोरिया अंकल के प्रति भी, डॉ.रामचन्द्र सिंहदेव जी के प्रति भी मैं अपना संपूर्ण आदर और श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

संसदीय कार्य मंत्री (श्री अजय चन्द्राकर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज 11 सितंबर है। 11 सितंबर भारत के इतिहास में एक बहुत महत्वपूर्ण दिन है। आज के दिन 1893 में स्वामी विवेकानंद जी ने शिकागो में ऐतिहासिक भाषण दिया था जिसमें भारत की सनातन परंपरा, संस्कृति, मूल्य सबको उन्होंने विश्व पटल पर स्थापित किया। आज इस सदन में संयोग से हम उन महापुरूषों को श्रद्धांजलि देने जा रहे हैं जिन्होंने उसके संदेश को आगे बढ़ाया है, जिन्होंने उसके महत्व को भारत के लोगों तक और दुनिया के पटल पर स्थापित करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया। स्वर्गीय बलराम दास जी टंडन, देश की राजनीतिक परिस्थितियां उस समय जो भी हों, पर एक बात स्थापित थी, एकदलीय सरकार की अवधारणा, लोकतंत्र होने के बावजूद एकदलीय सरकार की अवधारणा स्थापित थी। प्रजातंत्र मूल स्वरूप में सिर्फ विकसित हो रहा था। तत्कालीन भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्यामाप्रसाद मुकर्जी जी ने कश्मीर नीति से असहमति के जब आंदोलन की शुरूआत की तो उस समय उस ऐतिहासिक क्षण में कोई 5-7 लोग जो उपस्थित थे, उनमें एक बलराम दास जी टंडन हमारे पूर्व राज्यपाल भी उपस्थित थे। एक 23-24 साल का लड़का, उस समय उसकी आयु 25 साल नहीं थी नहीं तो वह 1952 का चुनाव भी लड सकते थे। राष्ट्रवाद के आंदोलन से प्रभावित होकर अपना संपूर्ण जीवन भारतमाता की सेवा में समर्पित करते हैं। उस तरह के अन्यान्य लोगों ने जो संघर्ष किया, आज वही

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

विचारधारा, वही देशप्रेम, भारत से लेकर पूरी दुनिया में भारत के इस विचार को प्रभावित कर रहा है। मैं उनको बहुत हृदय से श्रद्धासुमन समर्पित करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, कारण चाहे जो भी हो... (जारी).. श्री अरविन्द

अरविंद\11-09-2018\a18\11.45-11.50

.....जारी श्री अजय चन्द्राकर माननीय अध्यक्ष महोदय, कारण चाहे जो भी हो, मैंने कहा कि कम से कम एक दशक तक एकदलीय दल की अवधारणा थी। संसद में मान्यता प्राप्त नेता प्रतिपक्ष नहीं होते थे, छोटे-छोटे दल समूह थे। अटल बिहारी बाजपेयी जी सन् 1957 में जब पहली बार चुनकर जाते हैं, 33 साल का एक नवजवान, अपने स्वर से, अपने विचार से, अपनी वाणी से, अपने कार्य से देश की आवाज, देश में एक ऐसा स्वर भी हो सकता है, देश में एक ऐसा चिंतन भी हो सकता है, देश में एक समानान्तर विचारधारा भी हो सकती है, जो भारतमाता के बारे में सोचती है, देश की मजबूती के बारे में भी सोचती है और हम उसके लिए सब कुछ करने के लिए तैयार थे। उनके असहमति के स्वर इतने मुखर थे कि पंडित जवाहर लाल नेहरू जैसे लोगों को भी यह मानना पड़ा कि इनका भविष्य, इनके कार्यों में, इनकी वाणी में देश के प्रधानमंत्री की तरह एक चेहरा और भविष्य देखता हूँ। माननीय अध्यक्ष महोदय, उनका वही बोया बीज आज हम महसूस कर रहे हैं और छत्तीसगढ़ में तो विशेष तौर से कर रहे हैं। जो चीजें अभी घट रही हैं, जब हम कल अनुपूरक पास करेंगे तो आज 93 हजार करोड़ रूपये का बजट हो जायेगा। किसी दल, किन्हीं विशेष चीजों का उल्लेख न करते हुए मैं इतना कहूंगा कि जो भी लोग अपना नाम ले, जो भी नाम दर्ज करायें कि साहब छत्तीसगढ़ के लिए इसने सोचा, इसने किया, उसने किया, यह किया, वह किया, मैं उस बहस में जाने के बजाय यदि मैं एक नाम लूंगा क्योंकि वह तथ्य इतिहास में दर्ज है, वह अलग-अलग जगहों में प्रोसेडिंग में दर्ज है कि किसने किया, क्या किया, कब बहस हुई, कैसे हुई, पर किसी को श्रेय दिया जा सकता है तो एक आदमी माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी को दिया जा सकता है। जब यह तय हो गया कि छत्तीसगढ़ बन रहा है तो उसमें सौ लोग जुड़ गए, कोई ट्रेन लेकर जा रहा है, तो कोई बोगी लेकर जा रहा है, कोई झण्डा लेकर बैठ रहा है, वह अलग बात है, लेकिन जब सारी घटनाएं तय हो गई तो। आज 93 हजार करोड़ रूपये का बजट होने के बाद यदि माननीय रमन सिंह जी तीसरी बार निर्वाचित होकर कुछ करने के लिए सोच रहे हैं, सहमति-असहमति अपनी

असम्पादित/मुद्रण हेतु नहीं

जगह है, यदि किसी को श्रेय दिया जायेगा तो माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी को दिया जायेगा। मैं बहुत श्रद्धा के साथ अपने विधायक दल की ओर से, अपनी पार्टी की ओर से सबकी ओर से मैं उनके चरणों में श्रद्धा स्वरूप समर्पित करता हूँ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, सोमनाथ चटर्जी जी, इस विधान सभा में आये। पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन में माननीय प्रेम प्रकाश पाण्डेय जी अध्यक्ष थे। एक आदमी, जिसके पिता जी हिन्दू महासभा के संस्थापक सदस्यों, फाउण्डर सदस्यों में से थे, उस विचारधारा से प्रेरित थे। परन्तु बंगाल के शोषण, बंगाल की तात्कालीन राजनीति से उन्होंने संघर्ष का रास्ता चुना। उन्होंने रास्ता बदला कि शायद मैं इसमें काम नहीं कर पा रहा हूँ। संघर्ष के रास्ते के बाद भी संसदीय लोकतन्त्र में जो उनकी आस्था रही। उनका दल, उनकी विचारधारा, संसदीय लोकतन्त्र से नहीं जुड़ी थी। वह अलग बात है कि 1959 में दुनिया में पहली बार कम्युनिस्ट पार्टी ने निर्वाचन पद्धति को स्वीकार किया और केरल में पहली सरकार बनी। लेकिन अपने दल के निर्देश के बावजूद उन्होंने अध्यक्षीय आसंदी नहीं छोड़ी कि यह उन चीजों से ऊपर हो सकता है और उनको उनकी कीमत चुकानी पड़ी। माननीय अध्यक्ष महोदय, जब वे यहां आये थे तो उन्होंने एक बात कही। मैं मार्क्सवादी कम्युनिष्ट पार्टी, वामपंथी पार्टी से आता हूँ। इतने दिन सरकार में रहने के बावजूद भी हम खाद्यान्न सुरक्षा का कानून नहीं बना सके। उसी समय डॉ0 रमन सिंह जी की सरकार ने यह खाद्य सुरक्षा कानून पहली बार देश के सामने प्रस्तुत किया था। हमारे पास संसाधन कम थे। लेकिन एक कोशिश की थी, एक बीज बोया था कि प्रत्येक पंचायत में एक क्विंटल अनाज रखना अनिवार्य होगा, इसका कानून बना। उन्होंने कहा कि मैं बहुत बड़ी बात तो नहीं कहूंगा। .....जारी श्री श्रीवास

श्रीवास\11-09-2018\a19\11.45-11.50

जारी....श्री अजय चन्द्राकर :- बहुत बड़ी बात नहीं कहूंगा, इसके लिए देश में इस तरह का पहला कानून बनाने के लिए डॉ.रमन सिंह जी को जरूर बधाई देता हूँ । उन्होंने बहुत अच्छी शुरूआत की जो कम्युनिष्ट होकर नहीं कर पाये, सर्वहारा की बात करके नहीं कर पाये, उनकी इस पार्टी की सोच के ऊपर हमेंशा आरोप लगाते रहे, उन्होंने यह काम किया, एक जुड़ाव छत्तीसगढ़ के उस कानून से एक सोच झलकती रही । बहुत श्रद्धा के साथ संसदीय लोकतंत्र को मजबूत करने वाले उस महान नेता के प्रति मैं अपने दल और अपनी पार्टी की ओर से उनको

श्रद्धासुमन समर्पित करता हूँ । रामचन्द्र सिंह देव जी की विद्वता पर, प्रदेश की निष्ठा पर, चिन्तन पर, कोई प्रश्नचिन्ह नहीं उठा सकता । उसकी योग्यता का कितना सम्मान हुआ, छत्तीसगढ़ की राजनीति करने वाले लोग जानते हैं ? पार्टी के नाम का उल्लेख आया, उसकी भी टिकट काटी गयी, निर्दलीय तौर पर भी वह जीत कर आये । हम लोग वर्ष 2003 से 2008 के बीच विधान सभा में बैठते थे । उनके सम्मान करने वाले लोग ही बोलते थे कि आपके कारण ही हम इधर हैं, आपकी नीतियों के कारण हम इधर हैं । लेकिन मैं नेता प्रतिपक्ष जी के उस बात से सहमत हूँ, वही उसकी ध्येय निष्ठा थी, वही उसका आग्रह था, जिसके कारण अपने मूल्यों से उनहोंने समझौता नहीं किया, खुद पीछे हटने के लिए तैयार हो गये, मूल्यों से समझौता नहीं किया, सार्वजनिक जीवन में ऐसा चरित्र बहुत कम दिखता है । मेरे साथ उनके एकाध दो बहुत अचछे पल हैं । बहुत आनंद के साथ अपनी फोटोग्राफी की बात सुनाते थे, सुचित्रा सेन और नरगिस जी की खिंची हुई फोटो जरूर दिखाते थे । मुझे एक दिन आमंत्रित किया था कि मैं तुम्हारा पुराना कैमरा, पर्दा वाला कैमरा होता था, उसमें एक दिन फोटो जरूर खिंचूंगा । मेंरा दुर्भाग्य है कि मैं किन्ही भी कारणों से शामिल नहीं हो सका । अपने संग्रहालय को वह बोलते थे कि किसी भी जगह में आप चल दें, इतना बड़ा संग्रहालय और इतना संग्रह आपको कहीं देखने को नहीं मिलेगा । डॉ. रमन सिंह जी के लिए उन्होंने मुझे एक बार धन्यवाद दिया । जिस पार्टी में रहकर मैं काम नहीं कर सका अजय, उसको तुमने कर दिया । मैं मुख्यमंत्री जी को भी चिटठी लिखूंगा । उनके पिताजी, जैसा कि उन्होंने मुझे बताया, उस जिले के पहले ग्रेजवेट थे, उन्होंने श्रम कानून, मिनिमम वेजेस को लागू किया था । उनके पिताजी के नाम से हमने कोरिया के कॉलेज का नाम रखा । मैंने उनको भाव से भरे नहीं देखा, मैं जो काम को नहीं कर पाया, उसे भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने कर दिया, डॉ. रमन सिंह जी के उस भावना के लिए सम्मान करता हूँ । आपको कभी आजीवन भूल नहीं पाऊंगा । मेरे से ज्यादा सम्मान आप लोगों ने मेरे पिताजी को दिया । प्रतिदिन छत्तीसगढ़ के ग्रामीण विकास, सिंचाई, अर्थव्यवस्था, इनके लिए छत्तीसगढ़ के तमाम मंत्री चाहे वह किसी भी दल के हो, सअधिकार जाते थे, सअधिकार मिलते थे, मठा मंगाये, जूस मंगाये, जो भी हो, बोलकर पीते थे, लेकिन उनको कोई विरक्त नहीं कर सका । छत्तीसगढ़ के लिए रामचन्द्र सिंहदेव के रूप में एक चिंतनशील व्यक्ति का जाना, एक विचारशील व्यक्ति का जाना, एक बहुत बड़ी क्षति है । विचारधारा से ऊपर उठकर राज्य के हित को सोचने वाले चरित्र का जाना, मैं बहुत श्रद्धा के

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

साथ उनके प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ अध्यक्ष महोदय । आपने बोलने का अवसर दिया, इसके लिए धन्यवाद ।

अध्यक्ष महोदय :- श्री भूपेश बघेल ।

श्री भूपेश बघेल (पाटन) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, हम चार-चार महापुरूषों को श्रद्धांजलि देने के लिए यहां पर उपस्थित हुये हैं । करीब-करीब उनका संसदीय कार्य उसी समय शुरू होता है 60 के दशक में । आदरणीय बलरामदास जी टंडन हमारे राज्यपाल के रूप में रहे, उनका कार्यकाल निर्विवाद भी रहा । हम लोग हमेंशा उनसे मिलते रहते थे, शासन के नीतियों के खिलाफ कोई भी बात होती थी तो उनसे शिकायत करने जाते थे और बहुत ही स्नेहपूर्वक बिठाते भी थे और समझने की कोशिश भी करते थे कि हम लोग चाहते क्या हैं ? पंजाब विधान सभा में संसदीय कार्यकाल का उनका लम्बा अनुभव रहा है, सरकार में भी रहे । ऐसे व्यक्ति का जाना निश्चित रूप से देश के लिए क्षति है ।

अध्यक्ष महोदय, पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न श्री अटल विहारी वाजपेयी को भी मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ । उन्होंने लगातार लोक सभा में, राज्य सभा में, प्रतिनिधित्व किया। एक उदारवादी नेता के रूप में पूरा देश जानता है । एक अच्छे कवि, अच्छा वक्ता के रूप में भी वे जाने-पहचाने जाते हैं । वे अपनी बात बहुत बेबाकी से रखते थे । एक कुशल प्रशासक के रूप में भी उन्होंने 6 वर्ष तक प्रधानमंत्री के रूप में इस देश के निर्माण में योगदान दिया है । मैं उन्हें अपना श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ । साथ ही लोक सभा अध्यक्ष को भी मैं श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ । श्री सोमनाथ चटर्जी, जो लगातार 10 बार लोक सभा सदस्य रहे । सभी सदस्यों ने जिस प्रकार से प्रजातांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए दलगत भावना से ऊपर उठकर उन्होंने जो कार्य किया है, वह लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने वाला रहा है । ऐसे महापुरूष के जाने से निश्चित रूप से राष्ट्र की क्षति हुई है ......

श्रीमती यादव

नीरमणी\11-09-2018\b10\11.50-11.55

जारी.......श्री भूपेश बघेल :- दलगत भावना से ऊपर उठकर उन्होंने जो कार्य किया है, वह लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने वाला रहा है । ऐसे महापुरूष के जाने से निश्चित रूप से

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

राष्ट्र की क्षति हुई है । आदरणीय रामचन्द्र सिंहदेव जी के साथ हम लोगों को विधानसभा में काम करने का अवसर मिला, मंत्रिमण्डल में भी काम करने का अवसर मिला और छत्तीसगढ़ के बारे में और खासकर सिंचाई के बारे में निरंतर वे चिंतन करते रहते थे और उन्होंने कार्यरूप में परिणीत भी किया है । एक सहज-सरल और मिलनसार व्यक्ति अंतिम क्षणों तक के भी हम लोगों को बुलाकर चर्चा करते रहते थे और एक अच्छे फोटोग्राफर के साथ-साथ, अच्छे चिंतक, अच्छे विचारक, अच्छे योजनाकार के रूप में हमेशा उन्हें याद किया जाता रहेगा । मैं सभी महानुभावों को अपने दल की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । इसके साथ ही डेंगू से जिन लोगों की मौतें हुई हैं, उन्हें भी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं ।

कृषि मंत्री (श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम चार ऐसे नेता, मार्गदर्शक या महापुरूष जिनके लिये संसदीय कार्यों में काम करने वाले लोग हमारे जैसे विधायक, सांसद, मंत्री इन लोगों के लिये भी चारों ये मार्गदर्शक रहे हैं । स्वर्गीय बलरामजी दास टंडन हम लोगों ने नजदीक से उनको यहां राज्यपाल बनने के बाद में देखा कि उनका स्नेह एक पिता तुल्य स्नेह होता था । उनके सुझाव एक हमारे मार्गदर्शक के रूप में, परिवार के बड़े के रूप में होते थे और वे आज हमारे बीच में नहीं हैं । हमने पंजाब में भी माननीय मुख्यमंत्री जी के साथ उनकी अंत्येष्टि में जाने का अवसर मिला, आप भी साथ में थे तो उनके प्रति पंजाब में जो प्रेम और जो लोगों का सैलाब था उससे ऐसा लगता है कि श्री बलरामजी दास टंडन का केवल छत्तीसगढ़ के विकास में छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रहते हुए योगदान नहीं बल्कि उनका पंजाब में भी योगदान रहा । वे भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्यों में से रहे और ऐसे श्री बलरामजी दास टंडन के प्रति हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्रद्धेय अटल बिहारी बाजपेयी जी अजातशत्रु, प्रखर वक्ता, कवि, संसदविज्ञ, लोकप्रिय नेता हम सबके मार्गदर्शक, सर्वस्वीकार्यता जिनकी थी, जो प्रभावशाली नेता थे, हमारे छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता थे । जिन्होंने इस देश के चाहे नेहरू जी हों, इंदिरा जी हों, श्री नरसिम्हा राव जी हों सबके बीच में विपक्ष का होने के बाद भी जिनकी स्वीकार्यता हो । जिन्होंने जेनेवा में जाकर हिंदी में भाषण दिया हो, जिन्होंने परमाणु विस्फोट करके भारत का पूरे विश्व में नाम किया हो ऐसे श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी उनकी कवितायें जो हमको हर क्षण प्रेरणा देती हैं ।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

बाधाएं आती हैं आयें, घिरे प्रलय की घोर घटाएं,
पांव के नीचे अंगारे, सिर पर बरसे यदि ज्वालायें,
निज हाथों से हंसते-हंसते,
आग जलाकर चलना होगा, कदम मिलाकर चलना होगा ।

उन्होंने ऐसे-ऐसे विषय पर कि आप कभी भी विचलित हों तो उनकी कविताओं को देख लें तो आपका विचलन दूर हो जायेगा, आप अपने कर्तव्य मार्ग पर आगे बढ़ेंगे और उनका व्यक्तित्व तो इतना विशाल था कि आप अगर उनके साथ में 10 मिनट बात करेंगे तो वे एक शब्द में आपको जवाब दे देंगे । ऐसे प्रखर चिंतक और आज अगर हम छत्तीसगढ़ राज्य की इस विधानसभा में बैठे हैं तो अगर उसका श्रेय एकमात्र किसी व्यक्ति को जाता है तो माननीय अटल बिहारी बाजपेयी जी को जाता है । उन्होंने इस बात की चिंता नहीं की कि जब छत्तीसगढ़ राज्य बना, जैसा माननीय मुख्यमंत्री जी ने बताया कि सन् 1998 में सप्रे स्कूल की सभा में उन्होंने घोषणा की और सन् 2000 में छत्तीसगढ़ राज्य बना दिया ऐसे विरले नेता होते हैं, जो कहते हैं उसको करके दिखाते हैं और ऐसे माननीय अटल जी जिनको देश की सरकार ने भारत रत्न की उपाधि दी । ऐसे भारत रत्न अटल जी, हमारे छत्तीसगढ़ के निर्माता श्री अटल जी, कवि हृदय अटल जी जिन्होंने कभी जिंदगी में हार नहीं मानी.....जारी

.....श्री यादव

यादव\11-09-2018\b11\11.55-12.00

.....(जारी श्री बृजमोहन अग्रवाल) :- ऐसे अटल जी जिनको देश की सरकार ने भारत रत्न की उपाधि दी । ऐसे भारत रत्न अटल जी, हमारे छत्तीसगढ़ के निर्माता अटल जी, कवि हृदय अटल जी, जिन्होंने कभी जिन्दगी में हार नहीं मानी, हार नहीं मानूंगा, रार नहीं ठानूंगा, काल के कपाल पर लिखता मिटाता हूं, गीत नया गाता हूं । ऐसे अटल जी जिन्होंने लोगों को कहा कि छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता, टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता । उनकी यह सब कविताएं हमारे लिये हमेशा मार्गदर्शक रहेंगी । ऐसे अटल बिहारी वाजपेयी जी जिनको कभी पूरा देश नहीं भूल सकता । उनके जीवन के बारे में माननीय नेता जी और माननीय नेता प्रतिपक्ष जी दोनों ने इस बात को बताया कि विपक्ष की भी उनसे अस्पर्शता नहीं रही, पक्ष की अस्पर्शता नहीं रही । वह सबके स्वीकार्य नेता रहे और ऐसे नेता का हमारे बीच से चला जाना,

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वह पिछले दस सालों से सार्वजनिक जीवन में नहीं थे, पर उसके बाद भी आज उनके प्रति इतना प्रेम रहा । छत्तीसगढ़ प्रदेश के निर्माता को हमारी सरकार ने नई राजधानी का नाम अटल नगर रखकर एक सच्ची श्रद्धांजलि दी है । हम सब भी उनके प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं कि ऐसे नेता इस देश की धरती पर बार बार आएं और इस देश की धरती पर बार बार आकर इस देश के स्वाभिमान को ऊंचा करें । हम अटल जी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं ।

श्री सोमनाथ चटर्जी के बारे में हम लोगों ने बहुत सुना था, परंतु जब प्रेमप्रकाश पाण्डेय जी विधान सभा अध्यक्ष थे तो उस समय यहां पीठासीन अधिकारियों के सम्मेमन में वह आए, तब हमने उनके व्यक्तित्व को जाना, देखा, सुना । एक ऐसा व्यक्तित्व जो कम्युनिस्ट पार्टी से होने के बाद भी उनकी विद्वता के ऊपर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं था । उनके प्रति भी हम श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं ।

श्री रामचंद्र सिंहदेव तो हम सबके पितातुल्य थे क्योंकि उनके साथ में चार, पांच बार हम लोगों को इस सदन में, मध्य प्रदेश के सदन में बैठने का अवसर मिला । मतलब ऐसा फक्कड़, मौला, सीधा सादा, सरल, चप्पल पहनकर बृजमोहन, मैं चाय पीने आ रहा हूं और वह चले आते थे । कागज में अपने हाथों से लिखकर बताते कि तुमको यह करना चाहिए, सिंचाई विभाग में यह करना चाहिए, कृषि विभाग में यह करना चाहिए । हमारे कोरिया में आपको यह करने की जरूरत है । आप मुख्यमंत्री जी से बात करो, आपको ऐसा करना चाहिए । मतलब कभी उनमें ये नहीं था कि मैं इतना वरिष्ठ हूं, इतना सीनियर नेता हूं, कहां इन जूनियर लोगों के पास में जाकर मैं कहूंगा, परंतु ऐसे सरल व्यक्तित्व के धनी जिन्होंने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया । उनके स्वयं के रानजीतिक दल में भी उनको जो सही लगता था, वह कहते थे । छत्तीसगढ़ के हम सबके ऐसे वरिष्ठ मार्गदर्शक जो हमेशा छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और देश की चिंता करते थे । उनके शौक भी थे, वह उन शौकों को भी वह पूरा करते थे, परंतु उसके बाद भी वह अपने कर्त्तव्य के प्रति कभी डिगते नहीं थे । ऐसे रामचंद्र सिंहदेव जी की कमी छत्तीसगढ़वासियों को हमेशा सालती रहेगी । मैं उनके प्रति भी श्रद्धासमुन अर्पित करता हूं। श्रद्धेय हमारे पूर्व राज्यपाल जी, अटल बिहारी वाजपेयी जी, सोमनाथ चटर्जी जी, रामचंद्र सिंहदेव जी, सबके प्रति मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । श्री मिश्रा

अशोधित/अप्रकाशन के लिए नहीं

मिश्रा\11-09-2018\b12\12.00-12.05

राजस्व मंत्री (श्री प्रेम प्रकाश पाण्डेय) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम स्वर्गीय श्री बलराम दास टंडन जी जो कि छत्तीसगढ़ के महामहिम राज्यपाल रहे हैं, उनके बारे में सारे लोगों ने अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं। महामहिम राज्यपाल जो कि विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति भी थे और इस कारण से मेरा उनके साथ अपने विभाग से संबंधित और विश्वविद्यालयों के विभिन्न कार्यों से संबंधित कार्य करने का नजदीक से अवसर मिला। वह जिस रूप से दिखते थे उतने जितने सरल थे, उतने ही ज्ञानी थे। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत भाषाओं पर उनका उतना ही नियंत्रण था। शिक्षा के क्षेत्र में क्या नये-नये आयाम हो सकते हैं, कोई भी बात वहां रखने पर चाहे वह यूनिवर्सिटी को-ऑर्डिनेशन कमेटी की मीटिंग हो, इसके पहले मैं मध्यप्रदेश में भी मंत्री रहा हूं और को-ऑर्डिनेशन कमेटी की बैठकों में मैंने देखा कि बहुत से हमारे जो कुलाधिपति रहे वह पैरावाईज जो पुराने हो जाते हैं, अक्सर बैठकों में होता है कि चलो मीटिंग है इसको पास करना है लेकिन वह एक-एक पैरा पर, एक-एक शब्द पर बहस करते थे, लोगों से जानकारी लेते थे और उस पर अपनी राय भी देते थे। छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालयों में पी.जी. क्लासेस में सेमेस्टर सिस्टम लागू कराने में उनका बड़ा योगदान था। महामहिम राज्यपाल महोदय जो कि एक राष्ट्रीय विचारधारा से जुड़कर, जिन्होंने प्रदेश और देश की राजनीति में जो उस जमाने के भारतीय जनसंघ के संस्थापकों के साथ-साथ राष्ट्रवादी विचारधारा के जो संवाहक थे उन संवाहकों में एक बड़े ख्यातिनुमा नाम रहे। उनकी कर्मठता, उनकी विचारों के प्रति प्रतिबद्धता और राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव हम सबके लिए प्रेरणादायी रहेगी और छत्तीसगढ़ की जनता के लिए विभिन्न अवसरों पर अस्वस्थ रहने के बावजूद भी अंतिम बार पिछली विधानसभा में जब वह आये थे तो हम सबने उनको देखा और अक्सर वह कोशिश करते थे कि वह पूरा भाषण भी पढें। पिछली बार, कई बार लोगों ने कम पढ़ने का आग्रह भी किया था लेकिन वह बराबर लगभग पूरा भाषण पढ़ते थे। माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी भावनाओं से समवेत होते हुए हृदय से उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी जो इस देश के पूर्व प्रधानमंत्री, भारत रत्न, छत्तीसगढ़ के निर्माता, संसदविज्ञ, प्रखर वक्ता, विचारशील, कवि हृदय, लेखक क्योंकि राजनीति के शुरूआती दौर में उन्होंने वीर अर्जुन, पांचजन्य, राष्ट्रडंक सरीखे समाचार पत्रों का संपादन कार्य किया और संपादन कार्य के बाद ही वे राजनीति के क्षेत्र में जिस

अशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े थे और उस विचारधारा के एक ऐसे प्रखर व्यक्तित्व बनकर सामने आये कि हम सब जो आज राजनीति में हैं वे उनको अपना आदर्श मानकर के इस संस्था में आये। श्री कुरैशी

कुरैशी\11-09-2018\b13\12.05-12.10

जारी........श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय :- वे उनको अपना आदर्श मानकर इस संस्था में आए । जब हम लोग शुरूआती दौर में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् में काम करने के लिए 1976 में आए तो उस समय लोग एबीपीवी को अटलबिहारी बाजपेयी जी की पार्टी कहते थे । ए से अटल, बी से बिहारी, वी से बाजपेयी । जैसा कि नेता जी ने कहा अटल जी को सुनने के लिए सारी विचारधाराओं के लोग आते थे । वे कई बार इस बात का जिक्र भी करते थे कि जितने लोग सुनने आए हैं अगर वे सारे लोग वोट दे देते तो मैं कभी का जीत जाता और कभी की सरकार बन जाती । अध्यक्ष महोदय, आज हमारे सदन ने यह नियम बनाया है कि हमें वेल (गर्भगृह) में नहीं जाना चाहिए, नियम बनाने के बाद भी हम लोग कई बार उस नियम को तोड़ते हैं । लेकिन प्रतिपक्ष में रहते हुए अपने दल के लिए नियम बनाने वाले वे पहले ऐसे प्रतिपक्ष के नेता थे, जिनका यह भरोसा था कि यदि कोई सदस्य अपने स्थान पर खड़े रहकर, अपनी बात तर्क और तथ्यों के साथ रखता है तो उसे सुनने के लिए सारा सदन मजबूर होगा, उसे कभी भी वेल में जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । मुझे एक घटना याद है, जब पहली सरकार बनी थी, सोमनाथ चटर्जी जी भाषण कर रहे थे, टी.वी. में उसको दिखाया जा रहा था । हमारे एक सांसद उनके भाषण के बीच में कूदकर गए, उन्होंने भाषण को बंद किया और उस समय के साथी बताते हैं कि उन्होंने संसदीय दल की बैठक में कहा कि ऐसा दुबारा हुआ तो मैं संसद में नहीं जाउंगा । विचारों में विभिन्नता होने के बावजूद भी, असहमति होने के बावजूद भी, जिस लोकतंत्र की परिभाषा हम लोग कहते हैं कि असहमति से सहमति की ओर जाने का नाम ही लोकतंत्र है । अगर उसके जीते जागते उदाहरण थे तो माननीय अटलबिहारी बाजपेयी जी थे । उन्होंने हिन्दी को केवल यू.एन.ए. में ही स्थापित नहीं किया, बल्कि 1977 में जब वे विदेशमंत्री बने तो सबसे पहले भारत पाकिस्तान के बीच 1947 से बंद रेल सेवा को 1977 में पहली बार भारत-पाकिस्तान के बीच रेल सेवा को प्रारंभ किया तो माननीय अटलबिहारी बाजपेयी जी ने किया । मुझे विधान सभा अध्यक्ष के रूप में पाकिस्तान जाने का भी मौका मिला और पाकिस्तान में भी जो आम लोग थे वे अटल जी के प्रति पूरा सम्मान रखते थे । यह उनकी

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

सार्वभौमिक छवि थी, उनके व्यक्तित्व का चुम्बकत्व था कि सारे लोग खिंचे चले आते थे । छत्तीसगढ़ में भी भारतीय जनता पार्टी की शुरूआत हुई तो 1984 में 2 सीटें मिलने के बाद, पहली बार 1986 में जब छत्तीसगढ़ का प्रदेश स्तरीय सम्मेलन हुआ उसमें माननीय अटल जी आए और शायद पहली बार किसी नेता को उनके वजन के बराबर खून से तौला गया । उस समय बीबीसी एक प्रतिष्ठित न्यूज एजेंसी थी, उसने कहा कि आज तक नेताओं को सिक्कों आदि से तौला गया, लेकिन खून से नहीं तौला गया था । उनके गुण और चरित्र के बारे में हम सब लोग जानते हैं । वे संसदीय लोकतंत्र के ऐसे पुरोधा थे कि प्रतिपक्ष से लेकर प्रधानमंत्री के रूप में भी उन्होंने काम किया । हम सबके लिए तो सौभाग्य का दिन था जब हमें उनके साथ अकेले बैठने का अवसर मिला । 2004 चुनाव के बाद मैं जब अध्यक्ष बना और उनसे सौजन्य भेंट करने गया तो वन-टू-वन मिलने का अवसर मिला और हमारे जैसे लोग तो राजनीति में उस क्षण को पाकर ही मान लिया कि हम राजनीति में जिस उद्देश्य से आए थे उस उद्देश्य की लगभग पूर्ति हो गई । जारी -- श्री अग्रवाल --

अग्रवाल\11-09-2018\b14\12.10-15

जारी...श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय :- उस उद्देश्य की पूर्ति लगभग हो गई । वे इतने ही महान व्यक्तित्व के धनी थे । मैं आपके साथ, आपकी भावनाओं के साथ अपनी भावना को जोड़ते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, स्वर्गीय श्री सोमनाथ चटर्जी जी जो लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष थे । संसदीय इतिहास और संसदीय कार्यों के प्रखर वक्ता थे, जब विपक्ष में और कम्यूनिष्ट पार्टी के प्रखर वक्ताओं की बात होती थी तो स्वर्गीय इन्द्रजीत गुप्त, स्वर्गीय सोमेश्वर दत्त, भूपेश गुप्त और सोमनाथ चटर्जी, अटल बिहारी वाजपेयी, मधु लिमये ये सब ऐसे समकालीन नेता थे, जिनके बारे में डा. राममनोहर लोहिया लोग सुनने के लिए देखते थे और सोमनाथ चटर्जी जी जब यहां आये तो बहुत ही सरलता से उन्होंने मुझे कहा कि पाण्डेय जी, मेरी हिन्दी थोड़ी कमजोर है । मैंने कहा कि आप चिन्ता मत कीजिए । जितनी आपकी अच्छी हिन्दी है, उतनी अच्छी हम लोगों की अंग्रेजी है तो हम दोनों का काम चल जायेगा, फिर भी उन्होंने अपना पूरा भाषण यहां हिन्दी दिया । सोमनाथ चटर्जी जी विद्वान तो थे ही, उस कुर्सी पर बैठकर मैं एक, दो उदाहरण जरूर बताना चाहूंगा । एक बार पूरे सदन में बहुत शोरगुल हो गया,

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं

वे इतने उत्तेजित हो गए । संसदीय कार्य को और संचालन करने में वे स्वयं इतने इंवाल्व हो जाते थे और इतने उत्तेजित होकर उन्होंने बोल दिया कि जाओ, मैं आप सबको श्राप देता हूं कि आप लोग अगली बार कोई चुनकर नहीं आओगे और उसके बाद उनको लगा कि मैं क्या कह दिया तो दूसरे दिन उन्होंने चेयर से उस चीज के लिए खेद भी व्यक्त किया । पहली बार उनके नेतृत्व में सी.पी.ए. (कॉमनवेल्थ पार्लियामेंट्री एसोशिएशन) है, जिसमें हमेशा इंग्लैण्ड के ही आदमी अध्यक्ष होते थे, पहली बार किसी भारतीय को सी.पी.ए. का चेयर परसन बनने का अवसर मिला तो फिजी के सम्मेलन में उनके नेतृत्व में मिला और सारे लोगों ने मिलकर उन्हें जिताया और यह एक बड़ी बात थी कि किसी भारतीय को पहली बार और मुझे आज सदन में कहते हुए कहीं संकोच नहीं है कि उतने बड़े आर्गनाईजेशन के चुनाव में कास्ट, क्वीड, कम्यूनल की बातें करते हैं, कलर की बातें करते हैं, कहीं न कहीं वह भी प्रभावशील रही, लेकिन उन तमाम प्रभावों को काटते हुए भी सी.पी.ए. के चेयरपरसन में भारत का प्रतिनिधित्व वहां पर बैठा। ऐसे सोमनाथ चटर्जी थे और डा. श्यामाप्रसाद मुकर्जी के घर में वे पढ़े थे । वे जब यहां आये थे तो वे श्यामाप्रसाद मुकर्जी हाल में गए, कार्यक्रम किया तो हमने बताया कि ये हाल उनके नाम पर है । उन्होंने कहा कि आपने उन्हें देखा था तो हमने कहा कि नहीं, हम लोग उस समय धरती पर ही नहीं थे । जब श्यामा प्रसाद मुकर्जी थे, तब उन्होंने कहा कि मैं उनके घर में रहकर पढ़ा हूं और जैसा कि अजय जी ने कहा कि उनके पिता जी हिन्दू महासभा के वहां के कट्टर समर्थक श्यामा प्रसाद मुकर्जी जी के कट्टर साथी थे, लेकिन विचारधाराओं का यही पर देखा जाए, ये हमारे भारतीय लोकतंत्र की कितनी खुबसूरती भी है कि एक ही परिवार में, एक वंश में पिता-पुत्र भी दो अलग-अलग विपरीत ध्रुव के, विचारधाराओं के रहने के बावजूद भी एक दूसरे का सम्मान ही नहीं करते, बल्कि जीवन का भी उन्होंने पूरे का पूरा वहां पर संवर्धन किया। ऐसे सोमनाथ चटर्जी जी के प्रति मैं अपनी पूरा श्रद्धांजलि व्यक्त करता हूं ।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डा. रामचन्द्र जी सिंहदेव सरल, सहज, ईमानदार राजनेता के रूप में यदि किसी का भी छत्तीसगढ़ में नाम लिया जाएगा तो डा. रामचन्द्र सिंहदेव के बाद ही कोई होगा तो होगा, बाकी कोई उनके समान सरल, सहज और ईमानदार नेता नहीं है । मुझे याद है कि जब छत्तीसगढ़ बना था, उस समय वे वित्त और आबकारी मंत्री थे । आबकारी मंत्रियों के बारे में थोड़ा ठीक-ठाक नहीं रहता, लेकिन ....जारी..श्री देवांगन

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

देवांगन\11-09-2018\b15\12.15-12.20

जारी... श्री प्रेमप्रकाश पाण्डेय :- मुझे याद है कि जब छत्तीसगढ़ बना था, उस समय के वे वित्तमंत्री थे और आबकारी मंत्री भी थे। अब आबकारी मंत्री के बारे में थोड़ा ठीक-ठाक नहीं रहता। (हँसी) लेकिन उस समय लोग यह देखने आते थे कि चलो, रामचंद्र सिंहदेव जी का बंगला देखते हैं। वे ऐसे मंत्री थे, जिनके बंगले में दरवाजा तक नहीं था। कोई पेंटिंग नहीं थी। मतलब ऐसी कोई सजावट नहीं, कुछ नहीं। उनमें यह सरलता और सहजता थी। मैं जब अध्यक्ष की कुर्सी पर था, वे आते थे तो मैं शायद चेम्बर में किसी के लिए खड़ा होता था तो वे पहले व्यक्ति थे, जिनको देखकर मैं खड़ा होता था और वे कहते थे कि नहीं-नहीं, आप अध्यक्ष जी हैं, आपको खड़े नहीं होना चाहिए। वे उम्र में हम सबसे बड़े भी थे। इतने सरल और इतने ज्ञानी कि जिनके ज्ञान का यहां पर सारे लोगों ने जिक्र किया, उनके प्रति मैं पूरी श्रद्धा के साथ अपनी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। आपने इन चारों स्वर्गीय महानुभावों के प्रति जो अपनी भावनाएं व्यक्त की है, उसमें मैं अपने आप को समवेत् करते हुए इन सबके प्रति सच्ची श्रद्धा व्यक्त करता हूं।

श्री केशव चन्द्रा (जैजेपुर) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, आज हम चार ऐसे नेतृत्वकर्ता महापुरुष को श्रद्धांजलि देने जा रहे हैं, जो केवल अपने दल के लिए नहीं, बल्कि देश के लिए काम किये और लोगों ने जिनको स्वीकार किया। हमारे प्रदेश के राज्यपाल रहे स्वर्गीय बलराम जी दास टंडन, उनसे कई अवसरों पर मिलने का मौका मिला। वे एक अभिभावक की तरह मार्गदर्शन भी देते थे कि आप सदन में हो तो इस मुद्दे को सदन में बेहतर ढंग से कैसे उठा सकते हो। यह भी उनका मार्गदर्शन रहता था। स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी, जो कि छत्तीसगढ़ के निर्माता रहे हैं, अगर आज हम छत्तीसगढ़ प्रदेश में हैं तो यह उनकी देन है और जिन्होंने राजनीति में सभी लोगों के दिल पर राज किया, ऐसे हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी और वामपंथी के नेता स्वर्गीय सोमनाथ चटर्जी जी, जो उनकी विद्वता है और अभी सभी लोगों ने कहा कि डॉ. रामचन्द्र सिंहदेव जी, जो कि बहुत ही सहज, सरल और ईमानदार व्यक्ति थे, आज ऐसे नेताओं को हमने खोया है। निश्चित रूप से राजनीति

असम्पादित/प्रकाशन के लिए नहीं

में इस प्रदेश और देश को बहुत बड़ी कमी हुई है। मैं अपनी तरफ से, अपने दल की तरफ से इन सभी महान पुरुषों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

डॉ. विमल चोपड़ा (महासमुंद) :- माननीय अध्यक्ष महोदय, चार महान विभूतियों को श्रद्धांजलि देने के लिए हम सब यहां एकत्रित हैं। माननीय बलराम दास जी टंडन, जो हमारे प्रदेश के राज्यपाल थे और जीवन के अंतिम समय के कुछ माह को छोड़ दें तो इस उम्र में भी वे सक्रिय थे। जब वे यहां राज्यपाल बने तो हमको ऐसा लगता था कि उनका ज्ञान कैसा होगा, इस पर शंका होती थी। लेकिन जब उनको हम लोगों ने सुना तब लगा कि एक बहुत ज्ञानवान व्यक्ति हमारे प्रदेश के राज्यपाल हैं। जैसा उनका संघर्ष का जीवन था, जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी में फिर राज्यपाल रहते हुए उन्होंने जो देश की सेवा की है, वह अपने आप में अनुकरणीय है। वहीं हमारे देश के पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी, जिनको शब्दों में नहीं बांधा जा सकता। उनको महसूस किया जा सकता है कि उन्होंने देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर किया। वे ऐसे व्यक्ति थे, जो कहते थे कि व्यक्ति से बड़ा दल और दल से बड़ा देश और उन्होंने इसके लिए काम भी किया कि दल सब कुछ नहीं है, देश सबसे बड़ा है

.... जारी... श्रीमती सविता

सविता\11-09-2018\b16\12.20-12.25

जारी डॉ. विमल चोपड़ा :- वे ऐसे व्यक्ति थे जो ये कहते थे कि व्यक्ति से बड़ा दल और दल से बड़ा देश और उन्होंने इसके लिए काम भी किया कि दल सब कुछ नहीं है देश सबसे बड़ा है और जब दल और देश की बीच द्वंद हुआ तो वे देश के साथ रहे, दल के साथ नहीं रहे, ये एक बहुत बड़ी चीज उनके व्यक्तित्व में हमको देखने को मिलती है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, मुझे याद है कि जब बोफोर्स का मामला चल रहा था, उस समय वे रायपुर भी आए थे, सभाएं चलती थीं, हम लोग उनको रेल्वे स्टेशन छोड़ने गये थे, बहुत सारे लोग थे 100-50 नारे लगा रहे थे, उस समय इस नारे की बड़ी ख्याति थी [XX][1]। लेकिन जब किसी ने उस बात का नारा लगाया तो उन्होंने तत्काल मना किया कि ये नारा नहीं लगाना। वे अपने विरोधियों का भी सम्मान करते थे, उनका ऐसा व्यक्तित्व था, उन्होंने

[XX][1] विलोपित

छत्तीसगढ़ की स्थापना की। मैं उस बूढ़ा तालाब में हुई सभा का गवाह रहा हूँ, जिसमें उन्होंने घोषणा की थी कि आप मुझे 11 लोकसभा की सीट दीजिए, मैं आपको छत्तीसगढ़ दूंगा। हमने 10 लोकसभा की सीट दी, लेकिन उसके बाद भी उन्होंने अपना वायदा पूरा किया और छत्तीसगढ़ राज्य का निर्माण किया। मुझे लगता है कि हिन्दुस्तान में जितने भी राज्य बने हैं सबके लिए संघर्ष करना पड़ा, लेकिन छत्तीसगढ़ ऐसा राज्य बना, जिसमें हमको बहुत ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा। ये ऐसी बात थी कि आप कहिए, यदि बात सही है तो अटल जी उसको पूरा करने वाले व्यक्ति थे...।

श्री सत्यनारायण शर्मा :- आप भाजपा की ओर से बोल रहे हैं या अपने निर्दलीय की हैसियत से ?

डॉ. विमल चोपड़ा :- नहीं-नहीं। सबकी हैसियात से, निर्दलीय हूँ तो उसमें भाजपा, कांग्रेस की बात भी नहीं है।

माननीय अध्यक्ष महोदय, जिस समय छत्तीसगढ़ बना, उस समय सरकार कांग्रेस की बन रही थी, क्योंकि यहां के जो 90 विधायक थे, उसमें बहुमत कांग्रेस का था तब कुछ लोगों ने ये कहा कि अटल जी आप छत्तीसगढ़ राज्य बना रहे हैं, सरकार भी भाजपा की बननी चाहिए, आप कुछ ऐसा कीजिए कि सरकार कांग्रेस के बजाए भाजपा की बने, लेकिन उन्होंने मना किया कि ये काम हमारा नहीं है जिसका बहुमत है उसकी सरकार बने। ये एक बहुत बड़ी सोच, वे एक नये राज्य का निर्माण कर रहे हैं और उसकी बागडोर विरोधी पार्टी के हाथ में जा रही है उसके बावजूद भी उन्होंने राज्य का निर्माण किया, उन्हें हमारी भारतीय संस्कृति पर गर्व था, उन्हें कई चीजों पर गर्व था, वे संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी में बोले, उसमें उनको गर्व था। लेकिन उनके पास अहंकार कहीं फटकता नहीं था, उनके मन में अहंकार कहीं नहीं था। माननीय अध्यक्ष महोदय, एक आदमी जीवन को कितना समझ सकता है वह उनकी दो पक्तियों में मैं कहना चाहता हूँ :-

"कि जी भर कर जीया, मन से मरूं
लौटकर आऊंगा कूच से क्यों डरूं ।।"

असंशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

ये एक व्यक्ति का बताता है कि वह अपने जीवन में कितनी गहराई तक जा सकता है। मौत से हर व्यक्ति को डर रहता है, लेकिन अटल जी ऐसे थे जिनको मौत से भी डर नहीं था।

माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री सोमनाथ चटर्जी जी लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष थे, हम लोग बहुत ज्यादा नहीं जानते। लेकिन जब उनके दल ने कुछ विवाद के मुद्दे पर कहा कि आप अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दीजिए तो उन्होंने कहा कि अध्यक्ष किसी दल का नहीं होता और उन्होंने इस्तीफा देने से इंकार किया।

माननीय अध्यक्ष महोदय, डॉ. रामचन्द्र सिंहदेव जी छत्तीसगढ़ के बड़े सरल, सहज और जिनसे हर व्यक्ति मिल सकता था, अपनी बात कह सकता था ऐसे व्यक्ति थे और हम लोगों ने जो सुना है हालांकि संपर्क तो नहीं था, लेकिन वह प्रदेश के एक-एक पैसे का सदुपयोग करते थे वे जब वित्तमंत्री थे तो हम सुनते हैं कि यदि मुख्यमंत्री जी भी कहे कि इसको पास कर दीजिए तो वे मना कर देते थे। यदि ये ठीक नहीं है तो ये पास नहीं होगा, वित्तमंत्री की हैसियत से उनमें हिम्मत थी कि वे मुख्यमंत्री को भी मना कर देते थे और स्वयं जो पैसा देते थे उन कार्यों की देखरेख करते थे, निर्माण हो रहा है वहां वे जाते थे, वहां कार्य ठीक हो रहा है या नहीं, ये भी वे देखते थे, ऐसे सभी व्यक्तियों को मैं आज अपनी तरफ से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय :- मैं, सदन की ओर से शोकाकुल परिवारों के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूँ। दिवंगतों के सम्मान में अब सदन दो मिनट का मौन धारण करेगा।

(मौन के पश्चात्)

अध्यक्ष महोदय :- दिवंगतों के सम्मान में सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 12 सितम्बर, 2018 तक के लिए स्थगित ।

(अपराह्न 12 बजकर, 26 मिनट पर विधान सभा की कार्यवाही बुधवार, दिनांक 12 सितम्बर, 2018 (भाद्रपद 21, शक संवत् 1940) को पूर्वाह्न 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित की गई।)

रायपुर
दिनांक 11 सितम्बर, 2018

चन्द्र शेखर गंगराड़े
सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

असंशोधित/प्रकाशन के लिए नहीं